शान : जो शोले न बन सकी

बड़े सितारों और भारी बजट के साथ बनी फिल्म 'शान' 12 दिसंबर 1980 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। यह फिल्म उस दौर की सबसे चर्चित परियोजनाओं में से एक थी, क्योंकि इसके निर्देशक रमेश सिप्पी थे, जिन्होंने इससे पहले हिंदी सिनेमा को कालजयी फिल्म 'शोले' दी थी। शोले की ऐतिहासिक सफलता के बाद लगभग तीन वर्षों की मेहनत से 'शान' को तैयार किया गया और इससे दर्शकों व फिल्म इंडस्ट्री को काफी उम्मीदें थीं। 'शान' अपने समय की सबसे महंगी फिल्मों में शामिल थी। इसका बजट लगभग 6 करोड़ रुपये था, जो उस दौर में किसी भी हिंदी फिल्म के लिए असाधारण माना जाता था। खास बात यह थी कि यह बजट शोले के मुकाबले लगभग दोगुना था। भव्य सेट, शानदार लोकेशन, बड़े सितारों की मौजूदगी और तकनीकी भव्यता के कारण इसे एक भव्य सिनेमाई अनुभव बनाने की पूरी कोशिश की गई।

दीपक नौगाई
लेखक, हल्द्वानी

फिल्म को कल्ट क्लासिक का टैग

शान फिल्म के निर्माता को उम्मीद थी कि यह फिल्म शोले की तरह सुपरहिट साबित होगी, लेकिन बड़े नाम, बड़े बजट और भव्य सेट से सजी यह फिल्म अपना जलवा न दिखा सकी। नेगेटिव रिव्यूज के चलते फिल्म दर्शकों के समकक्ष सफलता न प्राप्त कर सकी। हालांकि बाद में फिल्म को कल्ट क्लासिक का टैग मिला और टेलीविजन में बहुत देखी गई। भले ही शान बॉक्स ऑफिस पर कमाल न दिखा सकी हो, पर यह फिल्म के किरदार के लिए ज्यादा याद की जाती है। गंजे शाकाल की क्रूर लोगों के जेहन में है। खलनायक 'शाकाल' के अदाकारी आज भी

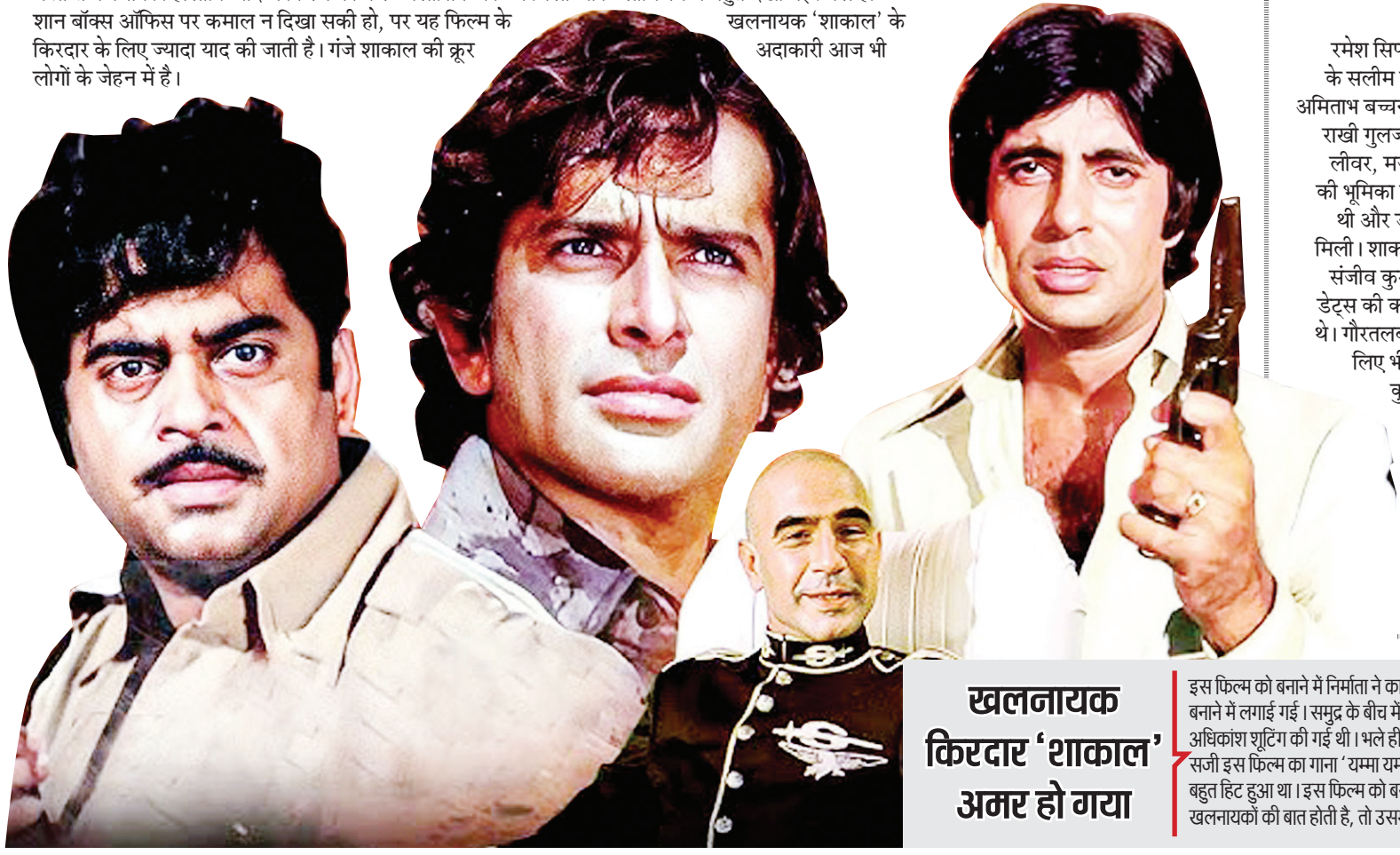

फिल्म में थे बड़े सितारे

रमेश सिप्पी निर्देशित इस फिल्म के लेखक भी शोले के सलीम खान और जावेद अख्तर थे। इस फिल्म में अमिताभ बच्चन, शत्रुघ्न सिन्हा, सुनील दत्त, शशि कपूर, राखी गुलजार, परवीन बॉबी, बिंदिया गोस्वामी, जॉनी लीवर, मजहर खान आदि ने काम किया था। विलेन की भूमिका नए कलाकार कुलभूषण खरबंदा ने निभाई थी और उन्हें भी शोले के गब्बर की तरह पापुलैरिटी मिली। शाकाल की भूमिका के लिए रमेश सिप्पी पहले संजीव कुमार को लेना चाहते थे, लेकिन उनके पास डेट्स की कमी थी, क्योंकि वह अन्य फिल्मों में व्यस्त थे। गौरतलब है कि शोले के गब्बर सिंह के किरदार के लिए भी पहली पसंद संजीव कुमार ही थे। संजीव कुमार से डेट्स नहीं मिली तो नए कलाकार कुलभूषण खरबंदा को खलनायक के रूप में लेने का निर्णय लिया गया। वे धर्मेंद्र और हेमा मालिनी को भी इस फिल्म में लेना चाहते थे, लेकिन उन दोनों के पास भी समय नहीं था, इसलिए उनकी जगह शशि कपूर और बिंदिया गोस्वामी को लिया गया।

खलनायक किरदार 'शाकाल' अमर हो गया

इस फिल्म को बनाने में निर्माता ने काफी खर्च किया था यानी शोले की कमाई इस फिल्म को बनाने में लगाई गई। समुद्र के बीच में एक द्वीप पर भव्य आधुनिक सेट बनाकर फिल्म की अधिकांश शूटिंग की गई थी। भले ही यह फिल्म न चली हो, लेकिन आरडी बर्मन के संगीत से सजी इस फिल्म का गाना 'यम्मा यम्मा', जिसे आरडी बर्मन और मोहम्मद रफी ने गाया था, बहुत हिट हुआ था। इस फिल्म को बने 46 साल हो गए हैं, लेकिन जब भी बॉलीवुड सिनेमा के खलनायकों की बात होती है, तो उसमें शाकाल का नाम भी जरूर शामिल होता है।

राजकुमार हिरानी की फिल्म में होंगे फोर ईडियट्स!

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान एक बार फिर चर्चा के केंद्र में हैं। उनकी निजी जिंदगी हो या फिर प्रोफेशनल फ्रंट, हर गतिविधि पर फैंस और मीडिया की पैनी नजर बनी हुई है। पिछले कुछ समय से उनके आने वाले प्रोजेक्ट्स को लेकर लगातार खबरें सामने आ रही हैं, जिसने दर्शकों की उत्सुकता को और भी बढ़ा दिया है। आमिर खान को बड़े पर्दे पर देखने के लिए उनके प्रशंसक लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं और अब ऐसा लग रहा है कि यह इंतजार जल्द खत्म हो सकता है।

इसी बीच आमिर खान की सुपरहिट और यादगार फिल्म '3 इडियट्स' के सीक्वल को लेकर एक बड़ी और दिलचस्प जानकारी सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इस बहुप्रतीक्षित सीक्वल पर अब आधिकारिक रूप से काम शुरू हो चुका है। एक अंदरूनी सूत्र ने पुष्टि की है कि फिल्म की स्क्रिप्ट लगभग पूरी हो चुकी है और फिलहाल इसे '4 इडियट्स' नाम के एक टेम्पररी वर्किंग टाइटल के तहत विकसित किया जा रहा है। हालांकि मेकर्स बाद में इस टाइटल को बदल भी सकते हैं। बताया जा रहा है कि इस फिल्म की शूटिंग 2026 में शुरू होगी और इसका निर्देशन एक बार फिर राजकुमार हिरानी करेंगे, जिनकी जोड़ी आमिर खान के साथ पहले भी कई बार सफल साबित हो चुकी है। मेकर्स इस बार कहानी को वहीं से आगे बढ़ाने की तैयारी में हैं, जहां पहले पार्ट का अंत हुआ था। हालांकि यह फिल्म सिर्फ एक साधारण सीक्वल नहीं होगी। दर्शकों को कुछ नए और ताजा एलिमेंट्स देखने को मिलेंगे, जो कहानी को और ज्यादा रोचक बनाएंगे। सबसे अहम बदलाव होगा एक नए मुख्य किरदार यानी 'चौथे इडियट' की एंट्री। इस किरदार के लिए किसी बड़े और लोकप्रिय सुपरस्टार को कास्ट करने की योजना बनाई जा रही है, जिसे लेकर फिल्म प्रेमियों के बीच काफी चर्चा और उत्सुकता है। फिल्म की ओरिजिनल स्टारकास्ट आमिर खान, आर. माधवन, शरमन जोशी और करीना कपूर खान के भी सीक्वल में नजर आने की पूरी संभावना जताई जा रही है। अगर ऐसा होता है, तो यह दर्शकों के लिए किसी बड़ी सौगात से कम नहीं होगा।

गौरतलब है कि साल 2009 में रिलीज़ हुई '3 इडियट्स' न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर ऐतिहासिक सफलता साबित हुई थी, बल्कि इसने भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर एक नई बहस को भी जन्म दिया था। यह फिल्म 200 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार करने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी और उसने बॉलीवुड में नए मानक स्थापित किए। ऐसे में इसके सीक्वल से भी दर्शकों की उम्मीदें स्वाभाविक रूप से काफी ऊंची हैं।

जिंदगी का सफर

'जॉनी' राजकुमार

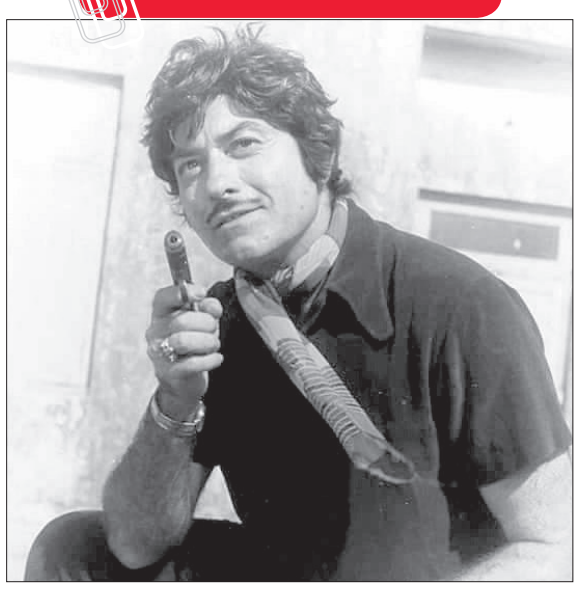

भारतीय सिनेमा के इतिहास में कई महान अभिनेता हुए, लेकिन 'जॉनी' संवाद के साथ दर्शकों के दिलों पर राज करने वाले राजकुमार (कुलभूषण पंडित) जैसा व्यक्तित्व शायद ही किसी का रहा हो। 8 अक्टूबर 1926 को बलूचिस्तान (अब पाकिस्तान में) में जन्मे राजकुमार अपनी कड़क आवाज, अनूठे अंदाज और बेबाक व्यक्तित्व के लिए आज भी याद किए जाते हैं। राजकुमार को बॉलीवुड का 'स्टाइल आइकन' माना जाता था। उनके संवाद बोलने का तरीका इतना प्रभावशाली था कि सिनेमाघरों में उनके मुंह खोलते ही तालियां बजने लगती थीं। 'जॉनी, हम तुम्हें मारेंगे और जरूर मारेंगे, लेकिन वह बंदूक भी हमारी होगी, गोली भी हमारी होगी और वक्त भी हमारा होगा' जैसे संवाद आज भी लोगों की जुबान पर हैं। 'वक्त', 'पाकीजा', 'हीर रांझा', 'सौदागर' और 'तिरंगा' जैसी फिल्मों ने उन्हें अभिनय के शिखर पर पहुंचाया।

फिल्मी दुनिया की चकाचौंध में आने से पहले राजकुमार मुंबई पुलिस में सब-इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। उनके व्यक्तित्व में जो अनुशासन और रौब दिखता था, उसकी जड़ें उनके पुलिसिया जीवन में थीं। 1952 में फिल्म 'रंगीली' से उन्होंने अभिनय की शुरुआत की, लेकिन सफलता का स्वाद उन्हें 1957 की ऐतिहासिक फिल्म 'मदर इंडिया' से मिला। इस फिल्म में उन्होंने नरगिस के पति 'शामू' का छोटा, लेकिन अत्यंत प्रभावशाली किरदार निभाया, जिसने उन्हें रातों-रात चर्चा में ला दिया।

राजकुमार की सबसे बड़ी पहचान उनकी संवाद अदायगी (डायलॉग डिलीवरी) थी। वे जब भी कोई संवाद बोलते, तो ऐसा लगता मानो शब्द सीधे दर्शकों के दिल पर प्रहार कर रहे हों। उनकी फिल्म 'वक्त' (1965) का डायलॉग- 'चिनॉय सेठ, जिनके घर शीशे के होते हैं, वो दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंका करते' आज भी भारतीय सिनेमा के सबसे लोकप्रिय संवादों में से एक है। इसके बाद 'पाकीजा', 'हीर रांझा', 'सौदागर' और 'तिरंगा' जैसी फिल्मों ने उन्हें एक 'लेजेंड' का दर्जा दिलाया। फिल्म 'सौदागर' में जब वे एक लंबे अरसे के बाद दिलीप कुमार के सामने आए, तो दोनों महानायकों के बीच का मुकाबला देखने लायक था। राजकुमार अपनी बेबाकी और स्पष्टवादिता के लिए मशहूर थे। वे किसी फिल्म को साइन करने से पहले पटकथा को बहुत बारीकी से परखते थे और यदि उन्हें कुछ पसंद न आता, तो वे बड़े से बड़े निर्देशक को मना करने में संकोच नहीं करते थे। उनका पहनावा अक्सर पाइप हाथ में लिए, रंगीन कोट और विशेष प्रकार के जूतों के साथ उन्हें भीड़ से अलग दिखाता था।

इंडस्ट्री में उनके कई किस्से मशहूर हैं, जैसे किसी बड़े कलाकार के सूट की तुलना पर्दे के कपड़े से कर देना या अपनी शर्तों पर शूटिंग करना। उनके भीतर एक ऐसा आत्मविश्वास था कि वे कभी किसी से प्रभावित नहीं हुए, बल्कि लोग उनसे प्रभावित होते थे। श्रीधर की फिल्म दिल एक मंदिर में राजकुमार ने कैंसर रोगी की भूमिका निभाई, जिसके लिए उन्हें दिल एक मंदिर और वक्त दोनों फिल्मों के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। राजकुमार का फिल्मी करियर चार दशकों तक चला, जिसमें उन्होंने लगभग 70 फिल्मों में काम किया। 1990 के दशक में वे गले के कैंसर (Throat Cancer) से पीड़ित हो गए। दुखद बात यह थी कि जिस आवाज के दम पर उन्होंने दुनिया जीती थी, उसी गले में समस्या पैदा हो गई। 3 जुलाई 1996 को इस महान कलाकार ने दुनिया को अलविदा कह दिया। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार बहुत ही निजी तरीके से किया गया, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनकी मृत्यु का तमाशा बने।

मॉडल आफ द वीक

नाम: कंचन गुप्ता
टाउन: कानपुर
एजुकेशन: बीकॉम
अचीवमेंट: विशिष्ट उद्यमी सम्मान
ड्रीम: मॉडलिंग, एक्टिंग